Bhagat Singh's Birth Anniversary भगत सिंह की जयंती

- 28th September 2024 marks the birth anniversary of Bhagat Singh, a legendary revolutionary whose spirit inspires generations in India. Celebrated as a national hero, he dedicated his life to fighting British colonial rule, leaving a legacy of courage and sacrifice.
  28 सितंबर 2024 को भगत सिंह की जयंती है, एक महान क्रांतिकारी जिनकी भावना भारत में पीढ़ियों को प्रेरित करती है। एक राष्ट्रीय नायक के रूप में मनाए जाने वाले, उन्होंने साहस और बलिदान की विरासत छोड़कर, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से लड़ने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया।

Bhagat Singh's Birth Anniversary भगत सिंह की जयंती

- Bhagat Singh was born on 28th September, 1907, in Banga, Punjab, British India (now in Pakistan). भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को बंगा, पंजाब, ब्रिटिश भारत (अब पाकिस्तान में) में हुआ था।
- He Came from a Sikh family actively involved in anti-colonial activities; his father, Kishan Singh, and uncle, Ajit Singh, were prominent freedom fighters. वह एक सिख परिवार से थे जो उपनिवेशवाद विरोधी गतिविधियों में सक्रिय रूप से शामिल थेय उनके पिता, किशन सिंह और चाचा, अजीत सिंह, प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी थे।
- Witnessed the Jallianwala Bagh massacre at the age of 12, which instilled a deep sense of patriotism and a vow to fight for India's freedom.
  12 साल की उम्र में जलियांवाला बाग नरसंहार देखा, जिसने उनमें देशभक्ति की गहरी भावना पैदा की और भारत की आजादी के लिए लड़ने का संकल्प लिया।

Bhagat Singh's Birth Anniversary भगत सिंह की जयंती

- Joined the National College, Lahore, founded by Lala Lajpat Rai, which emphasised Swadeshi Movement and provided a platform for revolutionary ideas. लाला लाजपत राय द्वारा स्थापित नेशनल कॉलेज, लाहौर में शामिल हुए, जिसने स्वदेशी आंदोलन पर जोर दिया और क्रांतिकारी विचारों के लिए एक मंच प्रदान किया।
- Bhagat Singh became a member of the Hindustan Republican Association (HRA) in 1924, later renaming it the Hindustan Socialist Republican Association (HSRA) in 1928. भगत सिंह 1924 में हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) के सदस्य बने, बाद में 1928 में इसका नाम बदलकर हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (HSRA) कर दिया गया।
- Naujawan Bharat Sabha was founded by Bhagat Singh in 1926, aimed at mobilising youth for the freedom struggle. नौजवान भारत सभा की स्थापना भगत सिंह ने 1926 में की थी, जिसका उद्देश्य युवाओं को स्वतंत्रता संग्राम के लिए संगठित करना था।

Bhagat Singh's Birth Anniversary भगत सिंह की जयंती

- Involved in the assassination of police officer J.P. Saunders in 1928 (Lahore Conspiracy Case) as retaliation for Lala Lajpat Rai's death due to police brutality. 1928 में पुलिस क्रूरता के कारण लाला लाजपत राय की मौत के प्रतिशोध के रूप में पुलिस अधिकारी जे.पी. सॉन्डर्स की हत्या (लाहौर षड्यंत्र केस) में शामिल थे।
- Threw a bomb in the Central Legislative Assembly on 18th April 1929, with B.K. Dutt to protest against repressive British laws. 18 अप्रैल 1929 को बी.के. दत्त के साथ केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंका। दत्त ने दमनकारी ब्रिटिश कानूनों का विरोध किया।
- Arrested in 1929 for the bomb incident and later charged with murder in the Lahore Conspiracy Case. He was tried, convicted, and sentenced to death. 1929 में बम कांड के लिए गिरफ्तार किया गया और बाद में लाहौर षडयंत्र मामले में हत्या का आरोप लगाया गया। उन पर मुकदमा चलाया गया, दोषी ठहराया गया और मौत की सजा सुनाई गई।

Bhagat Singh's Birth Anniversary भगत सिंह की जयंती

- Executed on 23rd March 1931, along with fellow revolutionaries Sukhdev and Rajguru, in Lahore. Bhagat Singh is affectionately known as Shahid-e-Azam, the greatest of martyrs. 23 मार्च 1931 को साथी क्रांतिकारियों सुखदेव और राजगुरु के साथ लाहौर में फाँसी दे दी गई। भगत सिंह को प्यार से शहीदों में सबसे महान शहीद–ए–आजम कहा जाता है।
- Authored significant works, including Why I Am an Atheist, The Jail Notebook and Other Writings, and several political manifestos advocating for socialism and revolution. महत्वपूर्ण रचनाएँ लिखीं, जिनमें मैं नास्तिक क्यों हूँ, द जेल नोटबुक एंड अदर राइटिंग्स और समाजवाद और क्रांति की वकालत करने वाले कई राजनीतिक घोषणापत्र शामिल हैं।
- In his early work, Vishwa Prem (Universal Love), Singh proclaimed the importance of equality. He envisioned a world free of hunger and war, where humanity transcends boundaries of race and nationality.
  अपने शुरुआती काम, विश्व प्रेम (यूनिवर्सल लव) में, सिंह ने समानता के महत्व की घोषणा की। उन्होंने भूख और युद्ध से मुक्त दुनिया की कल्पना की, जहां मानवता नस्ल और राष्ट्रीयता की सीमाओं से परे हो।

Bhagat Singh's Birth Anniversary भगत सिंह की जयंती

- Advocated Marxist and socialist ideologies, emphasising rationalism, equality, and justice. Critiqued organised religion, viewing them as forms of mental and physical slavery. तर्कवाद, समानता और न्याय पर जोर देते हुए मार्क्सवादी और समाजवादी विचारधाराओं की वकालत की। संगठित धर्म की आलोचना की, उन्हें मानसिक और शारीरिक गुलामी के रूप में देखा।
- Celebrated as a national hero and martyr; his birth anniversary and the date of his execution are observed annually to honour his contributions to India's freedom struggle. राष्ट्रीय नायक और शहीद के रूप में मनाया जाता है भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके योगदान का सम्मान करने के लिए उनकी जयंती और उनकी फांसी की तारीख प्रतिवर्ष मनाई जाती है।
- Every year, 23rd March is observed as Martyrs' Day as a tribute to freedom fighters Bhagat Singh, Sukhdev, and Rajguru. हर साल 23 मार्च को स्वतंत्रता सेनानियों भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु को श्रद्धांजलि के रूप में शहीद दिवस के रूप में मनाया जाता है।

Doddalathur Megalithic Site : Excavation
डोड्डालाथुर मेगालिथिक साइटः उत्खनन

- A team of history and archaeology scholars and students from the University of Mysore have embarked on an excavation of megalithic burial sites in Chamarajanagar district (Karnataka).
  मैसूर विश्वविद्यालय के इतिहास और पुरातत्व विद्वानों और छात्रों की एक टीम ने चामराजनगर जिले (कर्नाटक) में महापाषाणकालीन दफन स्थलों की खुदाई शुरू कर दी है।
- Doddalathur village, Hanur taluk, Chamarajanagar district, Karnataka. Situated in a small valley formed by the Male Mahadeshwara Hill ranges.
  डोड्डालाथुर गांव, हनूर तालुक, चामराजनगर जिला, कर्नाटक। माले महादेश्वर पर्वत श्रृंखला द्वारा निर्मित एक छोटी घाटी में स्थित है।

Doddalathur Megalithic Site : Excavation
डोड्डालाथुर मेगालिथिक साइटः उत्खनन

- Identified by C. Krishnamurti of the Archaeological Survey of India (ASI) in 1961.
  1961 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के सी. कृष्णमूर्ति द्वारा पहचाना गया।
- The site corresponds to the Iron Age, broadly placed between 1200 BC and 300 CE in South India.
  यह स्थल लौह युग से मेल खाता है, जिसे मोटे तौर पर दक्षिण भारत में 1200 ईसा पूर्व और 300 ईस्वी के बीच रखा गया है।

Doddalathur Megalithic Site : Excavation
डोड्डालाथुर मेगालिथिक साइट: उत्खनन

- Contains hundreds of megalithic burials characterized by circles made of large boulders. Many burials remain intact despite agricultural expansion and land development. इसमें सैकड़ों महापाषाणकालीन शवाधान शामिल हैं जिनकी विशेषता बड़े पत्थरों से बने वृत्त हैं। कृषि विस्तार और भूमि विकास के बावजूद कई कब्रगाहें बरकरार हैं।
- Current excavation led by a team from the University of Mysore and the Mythic Society, Bengaluru, with a focus on understanding megalithic-iron age culture and providing field training to archaeology students.
  महापाषाण–लौह युग की संस्कृति को समझने और पुरातत्व के छात्रों को क्षेत्रीय प्रशिक्षण प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करने के साथ वर्तमान उत्खनन का नेतृत्व मैसूर विश्वविद्यालय और माइथिक सोसाइटी, बेंगलुरु की एक टीम ने किया।

Hibakusha:

- Nihon Hidankyo, the organisation that worked for the welfare of the survivors of the 1945 bombings of Hiroshima and Nagasaki—called the hibakusha—has been awarded the Nobel Peace Prize for 2024.
- Hibakusha is the Japanese word for survivors of the 1945 atomic bomb attacks on Hiroshima and Nagasaki.

Hibakusha

- On August 6, 1945, the United States dropped the Little Boy atomic bomb on Hiroshima, Japan. 6 अगस्त, 1945 को संयुक्त राज्य अमेरिका ने जापान के हिरोशिमा पर लिटिल बॉय परमाणु बम गिराया।
- Three days later, the US dropped a second atomic bomb, known as Fat Man, on Nagasaki, Japan. तीन दिन बाद अमेरिका ने जापान के नागासाकी पर दूसरा परमाणु बम गिराया, जिसे फैट मैन के नाम से जाना जाता है।
- By the end of 1945, more than 200,000 people died as a direct result of these bombings. 1945 के अंत तक, इन बम विस्फोटों के प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में 200,000 से अधिक लोग मारे गए।

Hibakusha

- Many thousands of people survived with injuries from the attacks. They came to be known as hibakusha, which translates to bomb-affected people. कई हजार लोग हमलों से घायल होकर बच गए। उन्हें हिबाकुशा के नाम से जाना जाने लगा, जिसका अर्थ है बम से प्रभावित लोग।
- Niju hibakusha, double survivors, applies to more than 160 people who were present at both Hiroshima and Nagasaki. निजु हिबाकुशा, दोहरे जीवित बचे, 160 से अधिक लोगों पर लागू होते हैं जो हिरोशिमा और नागासाकी दोनों में मौजूद थे।
- Currently, the combined number of 'hibakusha' who are alive is officially 1,06,825, according to Japan's Ministry of Health, Labor and Welfare. Their average age is 85.6 years. जापान के स्वास्थ्य, श्रम और कल्याण मंत्रालय के अनुसार, वर्तमान में जीवित 'हिबाकुशा' की संयुक्त संख्या आधिकारिक तौर पर 1,06,825 है। इनकी औसत आयु 85.6 वर्ष है।

Hibakusha

- Hibakusha receives support from the Japanese government, including a medical allowance. हिबाकुशा को चिकित्सा भत्ते सहित जापानी सरकार से सहायता मिलती है।
- However, in Japan there continues to be discrimination against both the hibakusha and their children, and even grandchildren, based on the common belief that they may be physically or psychologically weakened and that radiation effects are hereditary or contagious.
  हालाँकि, जापान में हिबाकुशा और उनके बच्चों और यहां तक कि पोते–पोतियों दोनों के खिलाफ भेदभाव जारी है, इस आम धारणा के आधार पर कि वे शारीरिक या मनोवैज्ञानिक रूप से कमजोर हो सकते हैं और विकिरण के प्रभाव वंशानुगत या संक्रामक होते हैं।

Vijayanagara Kingdom : Copper Plates Discovered

- A collection of copper plate inscriptions featuring two leaves from the 16th Century CE was discovered at the Sri Singeeswarar temple in Mappedu village, Tiruvallur district of Tamil Nadu. तमिलनाडु के तिरुवल्लूर जिले के मप्पेडु गांव में श्री सिंगेश्वर मंदिर में 16वीं शताब्दी ईस्वी के दो पत्तों वाले तांबे की प्लेट शिलालेखों का एक संग्रह खोजा गया था।
- The two leaves of the copper plates strung together using a ring featuring the seal of the Vijayanagara Kingdom. तांबे की प्लेटों की दो पत्तियाँ विजयनगर साम्राज्य की मुहर की विशेषता वाली एक अंगूठी का उपयोग करके एक साथ पिरोई गईं।
- The inscription, donating a village to Brahmins by the Raja of Chandragiri, is written in Sanskrit and the Nandinagari script. चंद्रगिरि के राजा द्वारा ब्राह्मणों को एक गाँव दान करने का शिलालेख संस्कृत और नंदिनागरी लिपि में लिखा गया है।

Vijayanagara Kingdom : Copper Plates Discovered

- It was engraved in 1513 during the reign of King Krishnadevaraya.
  इसे 1513 में राजा कृष्णदेवराय के शासनकाल के दौरान उत्कीर्ण किया गया था।
- The Kingdom of Vijayanagar was ruled by Krishnadevaraya from 1509 to 1529 AD. विजयनगर साम्राज्य पर 1509 से 1529 ई. तक कृष्णदेवराय का शासन था।
- After Krishna Deva Raya, Achyuta Raya took over in 1530, followed by Sada Siva Raya in 1542. कृष्णदेव राय के बाद, 1530 में अच्युत राय ने सत्ता संभाली, उसके बाद 1542 में सदा शिव राय ने सत्ता संभाली।
- He was known by various titles, including “Kannadaraya” and “Kannada Rajya Ramaramana.” उन्हें ''कन्नड़राय'' और ''कन्नड़ राज्य रामरमण'' सहित विभिन्न उपाधियों से जाना जाता था।

Vijayanagara Kingdom : Copper Plates Discovered

- He is regarded as one of the greatest statesmen in Indian history and is considered one of the most significant rulers of mediaeval South India. उन्हें भारतीय इतिहास के सबसे महान राजनेताओं में से एक माना जाता है और उन्हें मध्यकालीन दक्षिण भारत के सबसे महत्वपूर्ण शासकों में से एक माना जाता है।
- The Vijayanagara Empire was established in the Deccan region from 1336 onwards, founded by Harihara (also known as Hakka) and his brother Bukka Raya. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 1336 से दक्कन क्षेत्र में हुई थी, जिसकी स्थापना हरिहर (जिसे हक्का भी कहा जाता है) और उनके भाई बुक्का राय ने की थी।

Vijayanagara Kingdom : Copper Plates Discovered

- They made Hampi the capital city (declared a World Heritage site by UNESCO in 1986). उन्होंने हम्पी को राजधानी बनाया (1986 में यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहर स्थल घोषित)।
- Vijayanagar Empire was ruled by four important dynasties (Sangama, Saluva, Tuluva, Aravidu). विजयनगर साम्राज्य पर चार महत्वपूर्ण राजवंशों (संगामा, सलुवा, तुलुवा, अराविदु) का शासन था।
- The empire lasted from 1336 until around 1660, although it faced a gradual decline in its final century following a devastating defeat by an alliance of deccan sultanates, leading to the capital being captured, looted, and destroyed यह साम्राज्य 1336 से 1660 के आसपास तक चला, हालाँकि अपनी अंतिम शताब्दी में दक्कन सल्तनत के गठबंधन द्वारा विनाशकारी हार के बाद इसे धीरे–धीरे गिरावट का सामना करना पड़ा, जिसके कारण राजधानी पर कब्जा कर लिया गया, लूट लिया गया और नष्ट कर दिया गया।

200th anniversary of Kittur Vijayotsava कित्तूर विजयोत्सव की 200वीं वर्षगांठ

- On the 200th anniversary of Kittur Vijayotsava a commemorative Postage stamp was released at the historic Kittur Rani Channamma Stage, Kittur Fort Premises. कित्तूर विजयोत्सव की 200वीं वर्षगांठ पर ऐतिहासिक कित्तूर रानी चन्नम्मा स्टेज, कित्तूर किला परिसर में एक स्मारक डाक टिकट जारी किया गया।
- She was born in Kakati, a small village in today's Belagavi district of Karnataka. उनका जन्म आज के कर्नाटक के बेलगावी जिले के एक छोटे से गाँव काकती में हुआ था।
- She became queen of Kitturu (now in Karnataka) when she married Raja Mallasarja of the Desai family. जब उन्होंने देसाई परिवार के राजा मल्लसर्जा से शादी की तो वह कित्तुरु (अब कर्नाटक में) की रानी बन गईं।

200th anniversary of Kittur Vijayotsava कित्तूर विजयोत्सव की 200वीं वर्षगांठ

- After Mallasarja's death in 1816, his eldest son, Shivalingarudra Sarja, ascended the throne. 1816 में मल्लसर्जा की मृत्यु के बाद, उनका सबसे बड़ा पुत्र, शिवलिंगरुद्र सरजा, सिंहासन पर बैठा।
- Before his death in 1824, Shivalingarudra adopted a child, Shivalingappa, as the successor. 1824 में अपनी मृत्यु से पहले, शिवलिंगरुद्र ने उत्तराधिकारी के रूप में एक बच्चे, शिवलिंगप्पा को गोद लिया था।
- However, the British East India Company refused to recognise Shivalingappa as the successor of the kingdom under the 'doctrine of lapse'.
  Kittur Rebellion: हालाँकि, ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी ने 'व्यपगत के सिद्धांत' के तहत शिवलिंगप्पा को राज्य के उत्तराधिकारी के रूप में मान्यता देने से इनकार कर दिया। कित्तूर विद्रोह:
- John Thackery, the British official at Dharwad, launched an attack on Kittur in October 1824. धारवाड़ के ब्रिटिश अधिकारी जॉन थैकेरी ने अक्टूबर 1824 में कित्तूर पर हमला किया।

200th anniversary of Kittur Vijayotsava कित्तूर विजयोत्सव की 200वीं वर्षगांठ

- In this first battle British forces lost heavily and the Collector and political agent, St. John Thackeray was killed by the Kitturu forces. इस पहली लड़ाई में ब्रिटिश सेना की भारी हार हुई और कलेक्टर और राजनीतिक एजेंट, सेंट जॉन ठाकरे को कित्तुरु सेना ने मार डाला।
- Two British officers, Sir Walter Elliot and Mr. Stevenson, were also taken as hostages. दो ब्रिटिश अधिकारियों, सर वाल्टर इलियट और मिस्टर स्टीवेन्सन को भी बंधक बना लिया गया।
- However, the British army again attacked the Kittur Fort and captured it. हालाँकि, ब्रिटिश सेना ने कित्तूर किले पर फिर से हमला किया और उस पर कब्जा कर लिया।
- Rani Chennamma and her family were imprisoned and jailed at the fort in Bailhongal, where she died in 1829. रानी चेन्नम्मा और उनके परिवार को बैलहोंगल के किले में कैद कर लिया गया, जहां 1829 में उनकी मृत्यु हो गई।